अंक १०



संस्कृत-पाठ-माला।

(संस्कृत भाषाका अध्ययन करनेका सुगम उपाय।)

दशम भाग।

लेखक और प्रकाशक।

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्याय मंडल, औंध (जि. सातारा)

SRI RAMAKRISHNA ASHRAMA
LIBRARY, SRINAGAR.
Accession No. 3811
Date

प्रथम वार १९८१

संवत् १९८२, शक १८४७, सन १९२५

मूल्य ।-) पांच आने।

वैदिकधर्म।

वैदिक तत्त्वज्ञानका प्रचार करनेवाला मासिक पत्र। वार्षिक मल्य म. आ. से ३॥) और वी. पी. से. ४) है।

महाभारत।

महाभारतका मूलसहित सरल भाषानुवाद प्रतिमास १०० पृष्ठोंका एक अंक प्रसिद्ध होता है। १२ अंकोंका अर्थात् १२०० पृष्ठोंका मूल्य म. आ. से ६) और वी. पी. से ७) रु. है।

आदिपर्व तैयार है। पृष्ठ संख्या. ११२९ है। मूल्य म. आ. से ६) रु. और वी. पी. से ७) रु. है।

सभापर्व। पृष्ठ संख्या ३९६ मू. २) वी. पी. से २॥)

महाभारत समालोचना। प्रथम भाग। मू. ॥)

वनपर्व छप रहा है।

पुरुषार्थ।

वैदिक धर्म प्रचारका मराठी भाषाका मासिक है। वार्षिक मूल्य म. आ. से २) और वी. पी. से २॥) रु. है।

मंत्री-स्वाध्याय मंडल,
औंध, (जि. सातारा).



अंक १०

संस्कृत-पाठ-माला ।

[संस्कृत भाषाका अध्ययन करनेका सुगम उपाय ।]

दशम भाग ।

लेखक और प्रकाशक ।

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्यायमंडल, औंध (जि. सातारा.)

प्रथमवार १०००

संवत् १९८२, शक १८४७, सन १९२५.

मूल्य ।-) पांच आने ।

स्त्रीलिंगी शब्दोंके रूप ।

इस पुस्तकमें स्त्रीलिंगी शब्दोंके रूप बनानेकी विधि बताई है ।

शब्दोंके रूप कंठ करनेकी बहुतसी आवश्यकता नहीं है, परंतु विविध रूपोंकी तुलना करके उनमें जो विशेषता है, उसका स्मरण करनेकी आवश्यकता है ।

यह कार्य रूपोंको वारंवार देखनेसे भी हो सकता है । पाठक यदि इस पुस्तकका अध्ययन उत्तम रीतिसे करेंगे तो उनको स्त्रीलिंग शब्दोंके रूप बनाना अत्यंत सुगम हो जायगा ।

स्वाध्याय मंडल
औंध (जि. सातारा)
६।११।२५

लेखक
श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

मुद्रक—रा. रा. **चिंतामण सखाराम देवळे,** मुंबईवैभव प्रेस, सर्व्हेंट्स ऑफ इंडिया सोसायटीज् होम, सँढर्स्ट रोड, गिरगांव—मुंबई.

प्रकाशक—**श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,** स्वाध्यायमंडल, औंध (जि. सातारा).

ॐ

संस्कृत-पाठ-माला ।

दशम भाग ।

पाठ १

अब इस पुस्तकमें स्त्रीलिंगी नामोंके रूप दिये जाते हैं—

आकारान्तः स्त्रीलिंगो रमा शब्दः ।

१	रमा	रमे	रमाः
सं०	रमे	,,	,,
२	रमां	,,	,,
३	रमया	रमाभ्यां	रमाभिः
४	रमायै	,,	रमाभ्यः
५	रमायाः	,,	,,
६	,,	रमयोः	रमाणाम्
७	रमायां	,,	रमासु

इसी रीतिसे निम्नलिखित शब्दोंके रूप बनते हैं—

शब्द ।

विद्या=विद्या	लता=वेल
देवता=देवी	अबला=स्त्री, बलहीन
वनिता=स्त्री	चपला=चंचल, बिजली
कान्ता=पत्नी	महिला=स्त्री
तारा=तारका	प्रपा=प्याऊ
ज्योत्स्ना=चांदना	याञ्चा=याचना
पाठशाला=पाठशाला	शाला=घर

वाक्य ।

१ विद्यया मनुष्याः शोभन्ते=विद्यासे मनुष्य शोभते हैं ।

२ लताभिः वृक्षः आच्छादितः=वेलियोंसे वृक्ष आच्छादित हुआ है।

३ महिलाभिः विद्याध्ययनं अवश्यं कर्तव्यम्=स्त्रियोंको विद्याका अध्ययन अवश्य करना चाहिये ।

४ तां प्रपां गत्वा यथेच्छं जलं पिब=उस प्याऊमें जाकर इच्छाके अनुसार जल पीओ ।

५ महिला विद्यया शोभते=स्त्री विद्यासे शोभती है ।

६ याञ्चया मनुष्यः पतति=याचनासे मनुष्य गिरता है ।

७ यथा आकाशे ताराः सन्ति=जैसे आकाशमें ताराएं होती हैं।

८ तासु लतासु व्याघ्रः वसति=उन लताओंमें वाघ है ।

९ रात्रौ ज्योत्स्ना भवति तथा दिने सूर्यप्रकाशः भवति= रात्रीमें चांदना होता है वैसा दिनमें सूर्य प्रकाश होता है ।

१० यौवने कान्ता प्रिया भवति=यौवनमें स्त्री प्रिय होती है ।

आकारान्तः स्त्रीलिंगो नासिका शब्दः ।

१ नासिका	नासिके	नासिकाः ।
सं० नासिके	,,	,,
२ नासिकां	,,	नासिकाः, नसः
३ नासिकयानसा	नासिकाभ्यां, नोभ्यां	नासिकाभिः, नोभिः
४ नासिकायै, नसे	,, ,,	नासिकाभ्यः, नोभ्यः
५ नासिकायाः, नसः	,, ,,	,, ,,
६ ,, ,,	नासिकयोः, नसोः	नासिकानाम्, नसाम्
७ नासिकायां, नसि	,, ,,	नासिकासु, नस्सु

वास्तविक " रमा " शब्दके समानही यह नासिका शब्द आकारान्त है । परंतु इसके रूप द्वितीया के बहुवचन के बाद जैसे होते हैं वे उपर दिये हैं । इन रूपोंमें एक रूप " रमा " शब्दके समान है और दूसरा भिन्न है । पाठक इसका अवश्य ध्यान रखें ।

वाक्य ।

१ नासिकया प्राणः संचरति=नासिकासे प्राण संचारता है ।

२ चोरेण तस्य नासिका कृत्ता=चोरने उसकी नासिका काटी

३ तस्य नसि व्रणः संजातः=उसके नाकमें व्रण हुआ है ।

४ वनिताभिः नासिकासु आभूषणानि धार्यन्ते=स्त्रियोंने नाकोंमें भूषण धारण किये जाते हैं ।

आकारान्तः स्त्रीलिंगो निशा शब्दः ।

१ निशा	निशे	निशाः ।
सं० निशे	,,	,,
२ निशां	,,	निशाः, निशः ।
३ निशया, निशा	निशाभ्यां, निड्भ्यां	निशाभिः, निड्भिः,
४ निशायै, निशे	,, ,,	निशाभ्यः, निड्भ्यः
५ निशायाः, निशः	,, ,,	,, ,,
६ ,, ,,	निशयोः, निशोः	निशानाम्, निशाम्
७ निशायाम्, निशी	,, ,,	निशासु, निट्त्सु

"निशा" शब्द भी "रमा" शब्दके समान ही है। परंतु पूर्ववत् द्वितीयाके बहुवचन के बाद इसके प्रत्येक में दो दो रूप होते हैं। एक "रमा" शब्दके समान रूप है और दूसरा भिन्न है। पाठक इस के विशेष रूपोंका निरीक्षण करें—

वाक्य ।

१ निशि चंद्रमाः प्रकाशते=रात्रीमें चांद प्रकाशता है ।

२ कृष्णपक्षस्य निशासु चोराणां भयं भवति=कृष्ण पक्षकी रात्रियोंमें चोरोंका भय होता है।

३ द्वाभ्यां निशाभ्यां त्वं तत्र गामिष्यसि=दो रात्रियोंसे तू वहां जायेगा ।

४ चंद्रमाः निशायाः पतिः=चांद रात्रीका पति है ।

आकारान्तः स्त्रीलिंगो जरा शब्दः।

१ जरा	जरसौ, जरे		जरसः, जराः
सं० हे जरे	,,	,,	,, ,,
२ जरसं, जराम्	,,	,,	,, ,,
३ जरसा, जरया	जराभ्याम्		जराभिः
४ जरसे, जरायै	,,		जराभ्यः
५ जरसः, जरायाः	,,		,,
६ ,, ,,	जरसोः, जरयोः		जरसां, जराणाम्
७ जरसि, जरायाम्	,,	,,	जरासु

यद्यपि "जरा" शब्द "रमा" के समानही आकारान्त है तथापि इसके कई रूप "रमा" शब्दके रूपोंके समान होते हैं और कई भिन्न होते हैं। पाठक इन रूपोंको इस पाठमें देखें और इसकी विशेषताका स्मरण रखें।

वाक्य।

१ जरसः पुरा मा मृथाः=वृद्धावस्थाके पूर्व न मर।

२ हे मनुष्य! त्वं जरसे यत=हे मनुष्य! तू वृद्धावस्थाके लिये यत्न कर।

३ देवाः जरया रहिताः भवन्ति=देव जरासे रहित होते हैं।

पाठकोंको स्मरण रहे, कि इन शब्दोंके कंठ करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। परंतु इन रूपोंकी विशेषताको ध्यानमें धरना चाहिये। किसी किसी स्थानपर ये रूप आते हैं तो इनको अच्छी प्रकार पहचानना चाहिये।

पाठ २

इस पाठमें निम्नलिखित श्लोकोंका अभ्यास कीजिये—

वैशम्पायन उवाच ।

ततः संप्रस्थितो राजा कौन्तेयो भूरिदक्षिणः ।
अगस्त्याश्रममासाद्य दुर्जयायामुवास ह ॥ १ ॥

अन्वयः=वैशम्पायनः उवाच ।–ततः भूरिदक्षिणः कौन्तेयः राजा संप्रस्थितः । अगस्त्याश्रमं आसाद्य दुर्जयायां उवास ह ।

संस्कृत टीका=ततः तस्मात् स्थानात् भूरिदक्षिणः बहुदक्षिणः कौन्तेयः कुन्तीपुत्रः राजा युधिष्ठिरः संप्रस्थितः सम्यक् प्रस्थितः चलितः । स राजा अगस्त्याश्रमं आसाद्य प्राप्य दुर्जयायां उवास दुर्जयानामके स्थाने स्थितः ।

अर्थ—पश्चात् उस स्थानसे बहुत दक्षिणा देनेवाला कुंतीपुत्र राजा युधिष्ठिर चला । वह राजा अगस्त्यके आश्रम को प्राप्त होकर दुर्जया नामक स्थानमें रहा ।

तत्रैव लोमशं राजा पप्रच्छ वदतां वरः ।
अगस्त्येनेह वातापिः किमर्थमुपशामितः ॥ २ ॥

अन्वयः—तत्र एव वदतां वरः राजा लोमशं पप्रच्छ इह वातापिः अगस्त्येन किमर्थं उपशामितः ?

संस्कृतटीका—तत्र एव तस्मिन् दुर्जयानामके स्थाने एव वदतां वरः वक्तृणां श्रेष्ठः राजा युधिष्ठिरः लोमशं मुनिं पप्रच्छ

पृष्टवान्। इह अस्मिन् स्थाने वातापिः नामकः राक्षसः अगस्त्येन मुनिना किमर्थं किं उद्देशेन उपशामितः मारितः ?

अर्थ—वहां ही वक्ताओंमें श्रेष्ठ राजा युधिष्ठिर लोमश मुनिसे पूछने लगा कि यहां वातापिको अगस्त्य मुनिने क्यों मारा था ?

आसीद्वा किं प्रभावश्च स दैत्यो मानवान्तकः।
किमर्थं चोदितो मन्युरगस्त्यस्य महात्मनः ॥ ३ ॥

अन्वयः—मानवान्तकः दैत्यः च किं प्रभावः आसीत् ? महात्मनः अगस्त्यस्य मन्युः किमर्थं च उदितः ?

संस्कृत टीका—सः मानवान्तकः मानवानां मनुष्याणां अंतकः दैत्यः असुरः किं प्रभावः कीदृशप्रभाववान् आसीत् ? महात्मनः अगस्त्यस्य मुनेः मन्युः क्रोधः किमर्थं किं कारणेन च उदितः उत्पन्नः ?

अर्थ—वह मनुष्योंका नाश करनेवाला राक्षस किस प्रभावसे युक्त था और महात्मा अगस्त्य को क्रोध किस कारण उत्पन्न हुआ था ?

लोमश उवाच।

इल्वलो नाम दैतेय आसीत्कौरवनंदन।
मणिमत्यां पुरि पुरा वातापिस्तस्य चानुजः ॥ ४ ॥

अन्वयः—लोमशः उवाच=हे कौरवनंदन ! इल्वलः नाम दैतेयः पुरा मणिमत्यां पुरि आसीत्। तस्य च अनुजः वातापिः।

संस्कृत टीका—लोमश उवाच—हे कौरवनंदन ! हे धर्मराज ! इल्वलः नाम दैत्यः पुरा पूर्वकाले माणिमत्यां माणिमतीनामकायां पुरि नगर्यां आसीत् । तस्य च अनुजः भ्राता वातापिः वातापिनामकः आसीत् ।

अर्थ—लोमश मुनि बोले—हे धर्मराज ! इल्वल नामक राक्षस पूर्व समयमें मणिमती नामक नगरीमें था और उसका भाई वातापि नामक था ।

समास ।

१ भूरिदक्षिणः=भूरी दक्षिणा यस्य सः (बहुत दक्षिणा देनेवाला)
२ अगस्त्याश्रमः=अगस्त्यस्य आश्रमः=(अगस्त्यका आश्रमः)
३ मानवान्तकः=मानवानां अंतकः (मनुष्योंका अंत करनेवाला)
४ अंतकः=अंतं करोति इति (नाश करनेवाला)
५ कौरवनंदनः=कौरवस्य नंदनः (कौरवका पुत्र)

संधि ।

१ प्रस्थितो राजा=प्रस्थितः राजा
२ तत्रैव=तत्र एव
३ अगस्त्येनेह=अगस्त्येन इह
४ आसीद्वा=आसीत् वा
५ मन्युरगस्त्यस्य=मन्युः अगस्त्यस्य
६ वातापिस्तस्य=वातापिः तस्य

पाठक इन समासों और संधियोंका अच्छी प्रकार अभ्यास करें । क्योंकि संस्कृत में सर्वत्र इनका उपयोग होता है और ध्यानपूर्वक इनका अभ्यास करके अच्छा ज्ञान संपादन करनेसे ही संस्कृतमें अच्छी गति हो सकती है ।

पाठ ३

इस पाठमें इकारान्त स्त्रीलिंगी शब्दों के रूप देखिये—

इकारान्तः स्त्रीलिंगो मति शब्दः ।

१ मतिः	मती	मतयः
० मते	,,	,,
२ मतिम्	,,	मतीः
३ मत्या	मतिभ्यां	मतिभिः
४ मत्यै, मतये	,,	मतिभ्यः
५ मत्याः, मतेः	,,	,,
६ ,, ,,	मत्योः	मतीनाम्
७ मत्यां, मतौ	,,	मतिषु

इस शब्दके रूपों के समान निम्नलिखित शब्दों के रूप होते हैं—

शब्द ।

नियतिः=दैव
प्रकृतिः=प्रकृति, स्वभाव
बुद्धिः=बुद्धि
ज्ञातिः=जाति
व्यक्तिः=व्यक्ति
उक्तिः=कथन
श्रुतिः=श्रवण, वेद
वेदिः=वेदि
ओषधिः=औषधि
तिथिः=तारीख

धूलिः=धूलि, मिट्टी
केलिः=खेल
रात्रिः=रात्री
स्मृतिः=स्मरण
कांतिः=तेज
द्युतिः=प्रकाश
प्रीतिः=प्रेम
भूतिः=ऐश्वर्य
भूमिः=जमीन
अवनिः=भूमि

वाक्य ।

१ प्रकृत्या यत् वक्रं तत्समं न भवति=स्वभाव से जो तेढा है वह सीधा नहीं होता ।

२ विशुद्धया बुद्धया युक्तः मनुष्यः बंधनात् मुक्तः भवति= शुद्ध बुद्धिसे युक्त मनुष्य बंधनसे मुक्त होता है ।

३ ज्ञातिभिः बांधवैः च सह धर्मं समाचर=ज्ञातियों और भाइयों के साथ धर्मका आचरण कर ।

४ सतां उक्तिः सदा एव हितकारिणी भवति=साधुओं की उक्ति सदा ही हितकारी होती है ।

५ भूतिं इच्छद्भिः मनुष्यैः श्रुत्या विहितं कर्म कतव्यम्= उन्नति चाहनेवाले मनुष्योंको श्रुतिसे विहित कर्म करना चाहिये ।

६ तारकाणां द्युतौ यत् तेजः भवति तत् न कुत्र अपि अन्यत्र दृश्यते=ताराओंके प्रकाशमें जो तेज होता है वह नहीं कहीं भी अन्यत्र दिखाई देता है ।

७ यदा आकाशं धूल्या व्याप्यते तदा विद्यार्थिभिः अध्ययन-कर्म न कर्तव्यं=जब आकाश धूलीसे व्याप्त होता है तब विद्यार्थियोंको अध्ययनका काम नहीं करना चाहिये ।

अब दीर्घ ईकारान्त शब्दोंके रूप देखिये—

ईकारान्तः स्त्रीलिंगो गौरी शब्दः ।

१	गौरी	गौर्यौ	गौर्यः
सं०	गौरि	,,	,,
२	गौरीं	,,	गौरीः

३	गौर्या	गौरीभ्यां	गौरीभिः
४	गौर्यै	,,	गौरीभ्यः
५	गौर्याः	,,	,,
६	,,	गौर्योः	गौरीणाम्
७	गौर्याम्	,,	गौरीषु

इस के समान निम्नलिखित शब्दोंके रूप बनते हैं—

खर्जूरी=खजूर वृक्ष	पुरी=नगर
केतकी=केतकी ,,	नारी=स्त्री
कदली=केल	जननी=माता
भारती=वाणी	धरणी=पृथ्वी
वाणी=भाषा	धरित्री= ,,
सरस्वती=नदी	मेदिनी=,,
नगरी=शहर	सौदामिनी=बिजुला

१ तव खर्जूरीणां वनं दर्शनीयं वर्तते=तेरा खजूरीयोंका वन देखने योग्य है ।

२ केतक्याः पुष्पं त्वया अत्र न स्थापितं=केतकीका फूल तूने यहां नहीं रखा ।

३ तस्य राज्ञः नगरीषु मर्कटयः बहवः सन्ति=उस राजाकी नगरीयोंमें बंदरियां बहुत हैं ।

४ जननीभिः पुत्राणां पालनं क्रियते=माताओंद्वारा लडकों का पालन किया जाता है ।

५ प्रेममय्या वाण्या मित्राणि वशे कुरु=प्रेमयुक्त भाषणसे मित्रोंको वशमें कर ।

६ मेदिन्यां शूराः एव विजयन्ते=पृथ्वीमें शूर ही विजय करते हैं।

७ मेघमंडलात् सौदामिनी पतिता=मेघमंडलसे बिजुली गिर पडी ।

८ जननी जन्मभूमिः च स्वर्गात् अपि गरीयसी=माता और जन्मभूमि स्वर्गसे भी श्रेष्ठ हैं ।

ईकारान्तः स्त्रीलिंगः स्त्रीशब्दः ।

१ स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः ।
सं० स्त्रि	,,	,,
२ स्त्रिय, स्त्रीं	,,	स्त्रियः, स्त्रीः ।
३ स्त्रिया	स्त्रीभ्यां	स्त्रीभिः
४ स्त्रियै	,,	स्त्रीभ्यः
५ स्त्रियाः, स्त्रियः	स्त्रीभ्यां	स्त्रीभ्यः
६ ,, ,,	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
७ स्त्रियाम्	,,	स्त्रीषु

पूर्वोक्त शब्दके रूपोंमें और इस शब्दके रूपोंमें जो भेद है वह पाठक स्मरणमें रखें,—द्वितीयाके रूपोंमें भेद विशेष है ।

वाक्य ।

१ स्त्रीणां स्वभावः प्रेममयः भवति=स्त्रियोंका स्वभाव प्रेममय होता है ।

२ स्त्रीषु जीवत्सु पुत्राणां कल्याणं भवति=स्त्रियोंके जीवित रहनेतक पुत्रोंका हित होता है ।

३ श्रूयंते पुराणेषु स्त्रीणां अपि शौर्यस्य कथाः=सुनी जाती हैं पुराणोंमें स्त्रियोंकी भी शौर्यकी कथाएं ।

४ एकान्ते परकीयाभिः स्त्रीभिः सह भाषणं न कर्तव्यं=एकान्तमें परकीय स्त्रियोंके साथ भाषण नहीं करना चाहिये ।

ईकारान्तः स्त्रीलिंगः श्री शब्दः ।

१ श्रीः	श्रियौ	श्रियः
सं० ,,	,,	,,
२ श्रियं	,,	,,
३ श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
४ श्रियै, श्रिये	,,	श्रीभ्यः
५ श्रियाः, श्रियः	,,	,,
६ ,, ,,	श्रियोः	श्रीणां, श्रियाम्
७ श्रियाम्, श्रियि	,,	श्रीषु

इस प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं—

शब्द ।

धीः=बुद्धी	तंत्रीः=वीणा
ह्रीः=लज्जा	लक्ष्मीः=संपत्ति
तरीः=नौका	श्रीः=शोभा

वाक्य ।

१ मनुष्यः धिया ज्ञान गृह्णाति=मनुष्य बुद्धिसे ज्ञान लेता है ।

२ तंत्रीणां मधुरः शब्दः श्रूयते=वाणीओंका मधुर शब्द सुना जाता है ।

३ विद्या लक्ष्म्या सह प्रकाशते=विद्या लक्ष्मीके साथ प्रकाशती है ।

पाठ ४

१ सीता उवाच—हे राम ! सुव्रतां स्वकां नारीं पतिव्रतां मां केन हेतुना वनं नेतुं न रोचयसे ? यदि एवं दुःखितां मां नेतुं न इच्छासि तर्हि विषं पास्यामि मरिष्यामि च। हे अनघ राम ! अहं मनसा अपि त्वदृते अन्यं पुरुषं न द्रष्टुं इच्छामि। त्वया विना एष निरयः स्यात्। इति मम परां प्रीतिं जानन् मया सह एव वनं गच्छ। विरहशोकं मुहूर्तं अपि सहितुं न उत्सहे। किं पुनर्वर्षाणि चतुर्दश।=सीता बोली—हे राम ! उत्तम व्रतवाली अपनी स्त्री मुझ पतिव्रता को किस हेतुसे वन को ले जाना तू पसंद नहीं करता है ? यदि ऐसी दुःखिता मुझको ले जाना तू नहीं चाहता तो विष पीऊंगी और मरूंगी। हे निष्पाप राम ! मैं मनसे भी तेरे विना दूसरे पुरुष को देखना नहीं चाहती। तेरे विना यह नरक ही होगा। ऐसी मेरी श्रेष्ठ प्राति जान कर मेरे साथही वनको तू जा। विरहशोक को घडीभर भी सहन करनेका उत्साह नहीं है। फिर कैसे चौदह वर्ष ?

२ राम उवाच=हे देवि ! तव दुःखेन स्वर्गं अपि न रोचये। अतः वनाय मां अनुगच्छस्व। हे सीते ! आरभस्व वनवास-क्षमाः क्रियाः। देहि ब्राह्मणेभ्यः विविधानि रत्नानि। मा चिरय। संत्वरस्व।=राम बोला—हे देवि ! तेरे दुःख के कारण स्वर्गभी मैं पसंद नहीं करता हूं। इस लिये वनके लिये मेरे पीछे चल। ह सीते ! आरंभ कर वनवास के योग्य क्रियाएं। दो ब्राह्मणोंके लिये विविध रत्न। देरी न कर। त्वरा कर।

३ लक्ष्मणः अपि सर्वं श्रुत्वा शोकं सोढुं असमर्थः रामं उवाच—अहं धनुर्धरः त्वां वनं अनुगमिष्यामि । मया समेतः अरण्यानि विचरिष्यसि । त्वया विना अहं देवलोकं अपि न वृणे । न अमरत्वं न च अपि लोकानां ऐश्वर्यं कामये ।=लक्ष्मण भी सब सुन कर शोक सहन करने के लिये असमर्थ होकर रामसे बोला मैं धनुर्धर तेरे पीछे वनको जाऊंगा । मेरे साथ तू अरण्यमें संचार करेगा । तेरे विना मैं स्वर्ग को भी वरना नहीं चाहता । अमरत्व तथा लोकोंका ऐश्वर्य भी नहीं चाहता ।

४ एवं वनवासाय निश्चितः सौमित्रिः सान्त्वैः बहुभिः रामेण निषिद्धः । परंतु सः पुनः उवाच । अनुज्ञातः अहं भवता पूर्वं एव । किं पुनः इदानीं निवारणं क्रियते ?=इस प्रकार वनवासके लिये निश्चय करनेवाले लक्ष्मणका बहुत शांतिके वचनोंसे रामने निवारण किया । परंतु वह फिर बोला । आज्ञा दी है मुझको आपने पहिले ही । क्यों फिर अब निवारण किया जाता है ?

५ अनेन सुप्रीतः रामः उवाच=हे सौमित्रे ! व्रज, आपृच्छस्व सर्वं सुहृज्जनं । हे लक्ष्मण ! राज्ञः जनकस्य महायज्ञे ये दिव्ये धनुषी, अभेद्ये कवचे, अक्षयसायकौ तूणीरौ, द्वौ खड्गौ च, सर्वं तत् आयुधं आदाय क्षिप्रं आगच्छ ।=इससे आनंदित हुआ राम बोला—हे लक्ष्मण ! जा, और पूछ अपने मित्रजनोंसे । हे लक्ष्मण ! राजा जनक के बडे यज्ञमें जो (दो) दिव्य धनुष्य, (दो) अभेद्य कवच, (दो) अक्षय तूणीर, और (दो) तलवारें (रखी हैं) वह सब शस्त्र लेकर शीघ्र आ ।

६ वैदेह्या सह ब्राह्मणेभ्यः बहुधनं दत्वा रामलक्ष्मणौ पितरं द्रष्टुं जग्मतुः। तदा रामं सीतां लक्ष्मणं च पदातिं एव दृष्ट्वा शोकोपहतचेतसः जनाः ऊचुः। आकाशगैः अपि भूतैः या सीता द्रष्टुं न शक्या तां एव सीतां अद्य राजमार्गगताः जनाः पश्यन्ति। रामः सूतं उवाच—आख्याहि मां पितुः। सः अपि रामप्रेषितः क्षिप्रं निश्वसन्तं नृपतिं दृष्टवान्। कथितं च तेन अस्मै। अयं अत्र रामः सत्यपराक्रमः ते सुतः द्वारि तिष्ठति। सर्वान् सुहृदः आपृच्छ्य त्वां इदानीं द्रष्टुं इच्छति। हे जगतीपते! इदानीं तं रामं पश्य।=सीता के साथ ब्राह्मणोंको बहुत धन देकर राम और लक्ष्मण पिताको देखने के लिये गये। तब राम सीता और लक्ष्मण को पैदल चलते देखकर शोकसे व्याकुलचित्त होकर लोग बोले कि आकाशके भूतों—प्राणियोंसे भी जो सीता देखना असंभव थी वही सीता आज मार्गके ऊपरसे चलने वाले लोग भी देखते हैं। रामने सूत से कहा—कह मेरे विषयमें पितासे। उसने भी रामसे प्रेषित होकर शीघ्रही श्वास जोरसे करने वाले राजाको देखा। और उसने उससे कहा। यहां यह सत्यपराक्रमी राम तेरा पुत्र द्वारमें खडा है। सब मित्रोंसे पूछ कर अब तुझे देखने के लिये आया है। हे राजा! उस रामको देख।

पाठ ५

इस पाठमें उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंके रूप देखिये—

उकारान्तः स्त्रीलिंगो धेनुशब्दः।

१ धेनुः	धेनू	धेनवः
सं० धेनो	,,	,,
२ धेनुं	,,	धेनूः

३ धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
४ धेन्वै, धेनवे	,,	धेनुभ्यः
५ धेन्वाः, धेनोः	,,	,,
६ ,, ,,	धेन्वोः	धेनूनाम्
७ धेन्वां, धेनौ	,,	धेनुषु

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं।

शब्द।

रज्जुः=रस्सी	हनुः=ठोडी
रेणुः=धूलि	तनुः=शरीर
शतद्रुः=नदी	कुः=पृथ्वी

१ रज्वा हस्ती बध्यते=रस्सीसे हाथी बांधा जाता है।
२ रेणुभिः गृहं आच्छिन्नं=धूलिसे घर आच्छादित है।
३ तनूनां रक्षणं कार्यं=शरीरोंकी रक्षा करनी चाहिये।

अब दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दके रूप देखिये—

ऊकारान्तः स्त्रीलिंगो वधू शब्दः।

१ वधूः	वध्वौ	वध्वः
सं. हे वधु	,,	,,
२ वधूम्	,,	वधूः
३ वध्वा	वधूभ्यां	वधूभिः
४ वध्वै	,,	वधूभ्यः

५	वध्वाः	वधूभ्यां	वधूभ्यः
६	,,	वध्वोः	वधूनाम्
७	वध्वां	,,	वधूषु

इस रीतिसे निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं—

शब्द ।

तनूः=शरीर	धनूः=धनुष्य
चमूः=सैन्य	अलाबूः=कद्दू
सरयूः=एक नदी	दिधिषूः=पुनर्विवाहित स्त्री

१ राज्ञः चम्वा अद्य महान् विजयः संपादितः=राजा के सैन्यने आज बडा विजय प्राप्त किया ।

२ सरय्वाः नद्याः जलं पिब=सरयू नदीका जल पी ।

३ दिधीषूं पितुः गृहं नय=पुनर्विवाहित स्त्रीको पिताके घर ले जा।

ऊकारान्तः स्त्रीलिंगः भ्रूशब्दः ।

१	भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुवः
सं.	,,	,,	,,
२	भ्रुवम्	,,	,,
३	भ्रुवा	भ्रूभ्याम्	भ्रूभिः
४	भ्रुवै, भ्रुवे	,,	भ्रूभ्यः
५	भ्रुवाः, भ्रुवः	,,	,,
६	,, ,,	भ्रुवोः	भ्रूणाम्, भ्रुवाम्
७	भ्रुवां, भ्रुवि	,,	भ्रूषु

इस प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप बनते है—

शब्द ।

वीरसूः=वीरपुत्र प्रसवनेवाली स्त्री ।

भूः=पृथ्वी

१ वीरसूनां स्त्रीणां आभूषणानि=वीरपुत्र प्रसवनेवाली स्त्रियों के गहने ।

२ तव भ्रुवौ शोभने स्तः=तेरी भौहें उत्तम हैं ।

३ भुवः पतिः राजा इति उच्यते=भूमिका पति राजा कहा जाता है।

४ वीरसूं मातरं नमस्कुरु=वीर प्रसवनेवाली माताको नमन कर।

अत्र ऋकारान्त शब्दोंके रूप देखिये—

ऋकारान्तः स्त्रीलिंगो मातृशब्दः ।

१ माता	मातरौ	मातरः
सं० मातः	,,	,,
२ मातरं	,,	मातॄः
३ मात्रा	मातृभ्यां	मातृभिः
४ मात्रे	,,	मातृभ्यः
५ मातुः	,,	,,
६ ,,	मात्रोः	मातॄणाम्
७ मातरि	,,	मातृषु

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप बनते हैं—

दुहितृ=पुत्री

ननांदृ=पतिकी बहिन

१ दुहिता मातुः गृहे न वसति=पुत्री माताके घर नहीं रहती ।

२ **ननांदुः पतिः अत्र न आगतः**=पतिकी बहिनका पति यहां नहीं आया।

३ **पृच्छ त्वं स्वां दुहितरम्**=पूच्छ तू अपनी पुत्रीको।

४ **मातुः माता मातामही इति कथ्यते**=माताकी माता मातामही कही जाती है।

५ **सा प्रियंवदा मम दुहितुः दुहिता अस्ति**=वह प्रियंवदा मेरी पुत्रीकी पुत्री है।

ऋकारान्तः स्त्रीलिंगीः स्वसृशब्दः।

१ **स्वसा**	**स्वसारौ**	**स्वसारः**
सं० हे **स्वसः**	,,	,,
२ **स्वसारं**	,,	**स्वसॄः**

शेषरूप मातृ शब्द के रूपोंके समान ही होते हैं। प्रथमा का द्विवचन और बहुवचन "स्वसृ" शब्द का **स्वसारौ—स्वसारः** ऐसा होता है और मातृ शब्दका **मातरौ—मातरः** ऐसा होता है। इतनी भिन्नता ध्यानमें रखना आवश्यक है।

वाक्य।

१ **तव मातुः स्वसा कुत्र गता?**=तेरी माताकी बहिन कहां गई?

२ **मम स्वसारः अद्य एव अत्र आगमिष्यन्ति**=मेरी बहिनें आजही यहां आवेंगीं।

३ **मम पितुः स्वसा तव मातुः स्वस्रा सह न गमिष्यति**=मेरे पिताकी बहिन तेरी माताकी बहिनके साथ नहीं जावेगी।

४ **इदं फलं तव मातामह्याः स्वस्रे देहि**=यह फल तेरी माताकी बहिनके लिये दे।

पाठ ६

१ आकाश इव निष्कंपः दशरथः गंभीरतया तं सूतं प्रत्युवाच । हे सुमंत्र ! मे दारान् अत्र आनय । ये इह मामकाः सन्ति तान् अपि अत्र आनय । सर्वैः परिवृतः एव राघवं द्रष्टुं इच्छामि ।=आकाशके समान न कांपनेवाला दशरथ गंभीरतासे उस सूत को बोला । हे सुमंत्र ! मेरी स्त्रियोंको यहां लेआ । जो यहां मेरे संबंधी हैं उनको भी यहां ला । सबसे परिवेष्टित होकर रामको देखना चाहता हूं ।

२ तथा राजा आज्ञापितः सूतः राजदारान् रामं लक्ष्मणं मैथिलीं च आदाय अभिमुखः जगाम । कृतांजलिं आयान्तं पुत्रं रामं दृष्ट्वा राजा वेगेन तं अभिदुद्राव । परंतु दुःखार्तः राजा रामं असंप्राप्य एव मूर्च्छितः भूत्वा भुवि पपात । तदा राजवेश्मनि ' हा राम' इति स्त्रीणां विलापः संजज्ञे । रामलक्ष्मणौ तु सीतया सार्कं शोकार्तं नृपं परिष्वज्य तं पर्यंके समवेशितवन्तौ ।= उस प्रकार राजासे आज्ञा पा कर सूत राजस्त्रियों और रामलक्ष्मण तथा सीताको लेकर सामने गया । हाथ जोडकर आनेवाले पुत्र रामको देखकर राजा वेगसे उसके पास दौडा । परंतु दुःखी राजा रामको न पाकरही मूर्छित होकर भूमिपर गिर गया । तब राजमंदिरमें " हे राम " ऐसा स्त्रियोंका विलाप हुआ । रामलक्ष्मणोंने तो सीताके साथ शोक करनेवाले राजाको आलिंगन देकर उसे पलंगपर रख दिया ।

३ अथ रामः लब्धसंज्ञं महीपतिं उवाच=हे महाराज ! त्वां

आपृच्छे । पश्य मा दंडकारण्यं प्रस्थितम् । लक्ष्मणं च अनुजानीहि । मां अन्वेतु सीता अपि वनं । हे राजन्! शोकं उत्सृज्य नः सर्वान् अनुजानीहि ।=पश्चात् राम जागे हुए राजासे बोला । हे महाराज ! तुझे पूछता हूं । देख मैं दंडकारण्य को जाता हूं । लक्ष्मणको आज्ञा दो । मेरे साथ सीता भी वनको चले । हे राजा ! शोक छोडकर हम सबको आज्ञा दो ।

४ राजा दशरथः उवाच–हे राम ! मां निगृह्य अद्य एव त्वं अयेध्यायां राजा भव । अहं कैकेय्या वरदानेन मोहितः ।=राजा दशरथ बोला–हे राम ! मुझे बांधकर आज ही तू अयोध्यामें राजा हो जाओ । मैं कैकेयीके वर देनेसे मोहित हुआ हूं ।

५ एवं उक्तः रामः पितरं उवाच–भवान् हि पृथिव्याः पतिः । अहं अरण्ये वत्स्यामि । न मे राज्यस्य इच्छा । वने चतुर्दश वर्षाणि विहृत्य पुनः ते पादौ ग्रहीष्यामि ।=इस प्रकार कहा हुआ राम पितासे बोला । आपही पृथ्वीके पालक हैं । मैं वन में रहूंगा । नहीं मेरी राज्यकी इच्छा । वनमें चौदह वर्ष विहार कर फिर तेरे पावोंको ग्रहण करूंगा ।

६ आर्तः राजा रुदन् प्रियं पुत्रं अब्रवीत् । श्रेयसे वृद्धये पुनरागमनाय च अव्यग्रः भूत्वा अकुतोभयं अरिष्टं पंथानं गच्छ । न शक्यते धर्माभिमनसः सत्यात्मनः च ते बुद्धिः सन्निवर्तयितुम् । हे पुत्र ! अद्य तु इदानीं रजनीं न गच्छ । एकाहं तव दर्शनेन तावत् साधु चरामि अहं । वस, मां अद्य मातरं च संपश्यन् शर्वरीम् इमाम् । साधयिष्यसि कल्पे श्वः सर्वकामैः तर्पितः ।=दुःखी

राजा रोता हुआ प्रिय पुत्रसे बोला। कल्याण वृद्धि और वापस आनेके लिये दुखी न होकर भयरहित कष्टरहित मार्ग को जा। नहीं शक्य है धर्माभिमानी सत्यात्मा जैसे तेरी बुद्धि बदलेनेके लिये। हे पुत्र! आज तू अब इस रात्रीको न जा। एक दिन तेरे दर्शन से तो आनंदसे चलावेंगे। रह, मुझे आज और माताको देखता हुआ इस रात्रीको। कल सवेरे सब इच्छाओं को तृप्त कर चले जाओगे।

७ अथ आर्तस्य पितुः भाषणं श्रुत्वा रामः अब्रवीत्। हे पितः! यान् गुणान् अद्य प्राप्स्यामि तान् श्वः मे कः प्रदास्यति? यः वरः त्वया युद्धे कैकेय्यै दत्तः सः निखिल एव इदानीं तस्यै दीयताम्। हे पार्थिव! त्वं सत्यप्रतिज्ञः भव। दीयतां राज्यं भरताय। न मे कांक्षितं राज्यं सुखं वा। ते दुःख अपगच्छतु, बाष्पपरिप्लुतः मा भूः। =पश्चात् दुःखी पिताका भाषण सुन कर राम बोला। हे पिता! जो गुण आज मैं प्राप्त करूंगा वे कल मुझे कौन देगा? जो वर तूने युद्धमें कैकेयीको दिया था वह सब ही अब उसे दे दें। हे राजा! तू सत्यप्रतिज्ञ हो। दे दो राज्य भरत के लिये। नहीं मुझे इच्छा है राज्यकी वा सुखकी। तेरा दुःख दूर हो, आंसुओंसे युक्त न हो।

८ दुःखितः एव राजा रामं आलिंग्य नष्टसंज्ञः भूत्वा भूमौ पपात। कैकेयीं वर्जयित्वा समस्ता देव्यः अपि समेताः तत्र रुरुदुः। तत्र सर्वं हा हा कृतं बभूव। =दुःखी राजा रामको आलिंगन देकर मूर्च्छित होकर भूमिपर गिर पडा। कैकेयी को छोड सब रानियां मिल कर रोने लगीं। वहां सब हाहाकार हुआ।

पाठ ७

अब इस पाठमें ओकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंके रूप देखिये—

ओकारांतः स्त्रीलिंगो द्योशब्दः ।

१ द्याः	द्यावौ	द्यावः
सं० हे द्यौः	,,	,,
२ द्यां	,,	द्याः
३ द्यवा	द्योभ्याम्	द्योभिः
४ द्यवे	,,	द्योभ्यः
५ द्योः	,,	,,
६ द्योः	द्यवोः	द्यवाम्
७ द्यवि	,,	द्योषु

इस प्रकार " गो " शब्दके भीरूप होते हैं—

वाक्य ।

१ **द्यवि सूर्यः भ्राजते**=द्युलोक में सूर्य चमकता है ।

२ **भूमिः अधः तथा द्यौः उपरि अस्ति**=भूमि नीचे और द्युलोक ऊपर है ।

३ **प्रतिदिने गवा दुग्धं दीयते**=प्रतिदिन गायद्वारा दूध दिया जाता है (अर्थात् गाय दूध देती है)

४ **गोभ्यः जलं देहि**=गौवोंके लिये जल दे ।

५ **गवां पतिः गोपतिः कथ्यते**=गौवोंके पालक को गोपति कहा जाता है ।

औकारान्तः स्त्रीलिंगो नौशब्दः ।

१	नौः	नावौ	नावः
सं०	हे,,	,,	,,
२	नावं	,,	,,
३	नावा	नौभ्याम्	नौभिः
४	नावे	,,	नौभ्यः
५	नावः	,,	,,
६	नावः	नावोः	नावाम्
७	नावि	,,	नौषु

वाक्य ।

१ नावा मनुष्यः सिन्धोः पारं गच्छति=नौकासे मनुष्य सिंधु नदीके पार जाता है ।

२ तस्य राज्ञः सैन्यं नौभिः नदीपारं अगच्छत्=उस राजाका सैन्य नौकाओं द्वारा नदीपार गया ।

३ नावां पतिः कुत्र अस्ति इदानीं?=नौकाओंका मालिक कहां है अब ?

४ द्वौ पुरुषौ नौभ्यां अत्र आगतौ=दो पुरुष दो नौकाओंसे यहां आगये ।

चकारान्तः स्त्रीलिंगः ऋच् शब्दः ।

१	ऋक्,	ऋग्	ऋचौ	ऋचः
सं०	,,	,,	,,	,,
२	ऋचं		,,	,,

३	ऋचा	ऋग्भ्यां	ऋग्भिः
४	ऋचे	,,	ऋग्भ्यः
५	ऋचः	,,	,,
६	,,	ऋचोः	ऋचाम्
७	ऋचि	,,	ऋक्षु

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं—

वाच्=वाणी | रुच्=तेज

वाक्य ।

१ ऋचः अक्षरेषु देवाः निषेदुः=ऋचाओंके अक्षरोंमें देव रहते हैं ।

२ मनुष्यः वाचा वदति=मनुष्य वाणीसे बोलता है ।

३ ऋग्भिः द्विजाः स्तुवन्ति=ऋचाओं द्वारा द्विज स्तुति करते हैं ।

४ ऋक्षु सर्वं ज्ञानं विद्यते=ऋचाओंमें सब ज्ञान होता है ।

जकारान्तः स्त्रीलिंगः स्रज् शब्दः ।

१	स्रक्, स्रग्	स्रजौ	स्रजः
सं०	,, ,,	,,	,,
२	स्रजं	,,	,,
३	स्रजा	स्रग्भ्याम्	स्राग्भिः
४	स्रजे	,,	स्रग्भ्यः
५	स्रजः	,,	,,
६	,,	स्रजोः	स्रजाम्
७	स्रजि	,,	स्रक्षु

१ सः स्रग्भिः स्वकीयं कंठं भूषयति=वह मालाओंसे अपने कंठ को भूषित करता है।

२ मनुष्यैः पुष्पैः स्रक् निर्मीयते=मनुष्योंने फूलोंसे माला निर्माण की जाती है।

३ स्रजा तं भूषयति=मालासे उसको भूषित करता है।

तकारान्तः स्त्रीलिंगः सरित् शब्दः।

१	सरित्, सरिद्,	सरिता	सरितः
सं०	,, ,,	,,	,,
२	सरितम्	,,	,,
३	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
४	सरिते	,,	सरिद्भ्यः
५	सरितः	,,	,,
६	,,	सरितोः	सरितां
७	सरिति	,,	सरित्सु

इसी प्रकार निम्न शब्दोंके रूप होते हैं—

विद्युत्=बिजली	योषित्=स्त्री
तडित्= ,,	क्षुत्=भूख
वीरुत्=औषधी	समित्=युद्ध

१ समिति शूराः युध्यन्ते=युद्धमें शूर लडते हैं।

२ सरितां पतिः समुद्रः=नदियोंका पति समुद्र है।

३ तडिता वृक्षः भग्नः=बिजलीसे वृक्ष भग्न हुआ।

४ वीरुद्भिः रोगस्य निवारणं भवति=औषधियोंसे रोग का निवारण होता है।

पाठ ८

पूर्व पाठोंमें जो महाभारतके श्लोक और रामायण का गद्य भाग दिया है उसका संधियुक्त संस्कृत अब यहां देते हैं। पाठक इसका उत्तम अभ्यास करें—

(१)

वैशम्पायन उवाच— ततो भूरिदक्षिणः कौन्तयो राजा संप्रस्थितः। अगस्त्याश्रममासाद्य दुर्जयायामुवास ह।

तत्रैव वदतां वरो राजा लोमशं पप्रच्छ । वातापिरगस्त्येन किमर्थमुपशामितः ?

स मानवान्तको दैत्यश्च किंप्रभाव आसीत् ? महात्मनोऽगस्त्यस्य मन्युः किमर्थं चोदितः ?

लोमश उवाच—हे कौरवनंदन ! इल्वलो नाम दैतेयः पुरा माणिमत्यां पुर्यासीत्। तस्य चानुजो वातापिः।

वारंवार पढनेपर यदि कोई कठिनता हुई तो उस कठिनता को दूर करनेके लिये इस पुस्तक का द्वितीय पाठ देखें।

(२)

सीतोवाच—हे राम ! सुव्रतां स्वकां नारीं पतिव्रतां मां केन हेतुना वनं नेतुं न रोचयसे ? यद्येवं दुःखितां मां नेतुं नेच्छसि तर्हि विषं पास्यामि मरिष्यामि च। हे अनघ राम ! अहं मनसाऽपि त्वदृतेऽन्यं पुरुषं न द्रष्टुमि-

च्छामि । त्वया विनैष निरयः स्यात् । इति मम परां प्रीतिं जानन्मया सहैव वनं गच्छ । विरहशोकं मूहूर्तमपि सहितुं नोत्सहे । किं पुनर्वर्षाणि चतुर्दश ?

राम उवाच—हे देवि ! तव दुःखेन स्वर्गमपि न रोचये । अतो वनाय मामनुगच्छस्व । हे सीते ! आरभस्व वनवासक्षमाः क्रियाः । देहि ब्राह्मणेभ्यो विविधानि रत्नानि । मा चिरय । संत्वरस्व ।

लक्ष्मणोऽपि सर्वं श्रुत्वा शोकं सोढुमसमर्थो राममुवाच—अहं धनुर्धरस्त्वां वनमनुगामिष्यामि । मया समेतोऽरण्यानि विचरिष्यसि । त्वया विनाऽहं देवलोकमपि न वृणे । नामरत्वं नचापि लोकानामैश्वर्यं कामये ।

एवं वनवासाय निश्चितः सौमित्रिः सान्त्वनैर्बहुभी रामेण निषिद्धः । परंतु स पुनरुवाच । अनुज्ञातोऽहं भवता पूर्वमेव । किं पुनरिदानीं निवारणं क्रियते ?

अनेन सुप्रीतो राम उवाच—हे सौमित्रे ! व्रज, आपृच्छस्व सर्वं सुहृज्जनम् । हे लक्ष्मण ! राज्ञो जनकस्य महायज्ञे ये दिव्ये धनुषी, अभेद्ये कवचे, अक्षयसायकौ तूणीरौ, द्वौ खड्गौ च सर्वं तदायुधमादाय क्षिप्रमागच्छ ।

वैदेह्या सह ब्राह्मणेभ्यो बहुधनं दत्वा रामलक्ष्मणौ पितरं द्रष्टुं जग्मतुः । तदा रामं सीतां लक्ष्मणं च पदातिमेव दृष्ट्वा शोकोपहतचेतसो जना ऊचुः । आकाशगैरपि भूतैर्या सीता

द्रष्टुं न शक्या तामेव सीतामद्य राजमार्गगता जनाः पश्यन्ति। रामः सूतमुवाच—आख्याहि मां पितुः। सोऽपि रामप्रेषितः क्षिप्रं निःश्वसन्तं नृपतिं दृष्टवान्। कथितं च तेनाऽस्मै। अयमत्र रामः सत्यपराक्रमस्ते सुतो द्वारि तिष्ठति सर्वान्सुहृद आपृच्छ्य त्वामिदानीं द्रष्टमिच्छति। हे जगतीपते! इदानीं तं रामं पश्य।

पाठक इस पाठका दो चार वार पठन करें और यदि कोई वाक्य समझमें न आया तो पूर्वपाठमें देखें। वहां ये ही वाक्य पदच्छेदपूर्वक दिये हैं।

आकाश इव निष्कम्पो दशरथो गंभीरतया तं सूतं प्रत्युवाच। हे सुमंत्र! मे दारानत्रानय। य इह मामकाः सन्ति तानप्यत्रानय। सर्वैः परिवृत एव राघवं द्रष्टुमिच्छामि।

तथा राज्ञाज्ञापितः सूतो राजदारान्रामं लक्ष्मणं मैथिलीं चादायाभिमुखो जगाम। कृताञ्जलिमायान्तं पुत्रं रामं दृष्ट्वा राजा वेगेन तमभिदुद्राव। परंतु दुःखार्तो राजा राममसंप्राप्यैव मूर्च्छितो भूत्वा भुवि पपात। तदा राजवेश्मनि हा रामेति स्त्रीणां विलापः संजज्ञे। रामलक्ष्मणौ तु सीतया साकं शोकार्तं नृपं परिष्वज्य तं पर्यंके समवेशितवन्तौ।

अथ रामो लब्धसंज्ञं महीपतिमुवाच। हे महाराज! त्वामापृच्छे। पश्य मां दंडकारण्यं प्रस्थितम्। लक्ष्मणं चानुजानीहि। मामन्वेतु सीताऽपि वनम्। हे राजन्! शोकमुत्सृज्य नः सर्वाननुजानीहि।

राजा दशरथ उवाच—हे राम ! मां निगृह्याद्यैव त्वमयोध्यायां राजा भव । अहं कैकेय्या वरदानेन मोहितः ।

एवमुक्तो रामः पितरमुवाच—भवान् हि पृथिव्याः पतिः । अहमरण्ये वत्स्यामि । न मे राज्यस्येच्छा । वने चतुर्दशवर्षाणि विहृत्य पुनस्ते पादौ ग्रहीष्यामि ।

आर्तो राजा रुदन् प्रियं पुत्रमब्रवीत् । श्रेयसे वृद्धये पुनरागमनाय चाव्यग्रो भूत्वाऽकुतोभयमरिष्टं पंथानं गच्छ । न शक्यते धर्माभिमनसः सत्यात्मनश्च ते बुद्धिः सन्निवर्तयितुम् । हे पुत्र ! अद्य त्विदानीं रजनीं न गच्छ । एकाहं तव दर्शनेन तावत्साधु चराम्यहम् । वस, मामद्य मातरं च संपश्यन् शर्वरीमिमाम् । साधयिष्यसि कल्ये श्वः सर्वकामैस्तर्पितः ।

अथार्तस्य पितुर्भाषणं श्रुत्वा रामोऽब्रवीत् । हे पितः ! यान्गुणानद्य प्राप्स्यामि तान्श्वो मे कः प्रदास्यति ? यो वरस्त्वया युद्धे कैकेय्यै दत्तः स निखिल एवेदानीं तस्यै दीयताम् । हे पार्थिव ! त्वं सत्यप्रतिज्ञो भव । दीयतां राज्यं भरताय । न मे कांक्षितं राज्यं सुखं वा । ते दुःखमपगच्छतु, बाष्पपरिप्लुतो मा भूः ।

दुःखित एव राजा राममालिंग्य नष्टसंज्ञो भूत्वा भूमौ पपात । कैकेयीं वर्जयित्वा समस्ता देव्योऽपि समेतास्तत्र रुरुदुः । तत्र सर्वं हाहाकृतं बभूव ।

पाठक अभ्यास करते समय कोई वाक्य समझमें न आया तो पीछे देखें ।

पाठ ९

दकारांतः स्त्रीलिंगः शरद् शब्दः ।

१	शरत्, शरद्	शरदौ	शरदः
सं.	,, ,,	,,	,,
२	शरदं	,,	,,
३	शरदा	शरद्भ्यां	शरद्भिः
४	शरदे	,,	शरद्भ्यः
५	शरदः	,,	,,
६	,,	शरदोः	शरदाम्
७	शरदि	,,	शरत्सु

निम्नलिखित शब्दोंके रूप इसी रीतिसे होते हैं—

आपद्=आपत्ति	संपद्=संपत्ति
विपद्=विपत्ति	संसद्=सभा
समिध=समिधा	परिषद्="
मृद्=मिट्टि	दृषद्=पत्थर

१ आपदि एव मित्रस्य परीक्षा भवति=आपत्तिमेंही मित्रकी परीक्षा होती है।

२ संसदि सर्वे पंडिता वदंति=सभामें सब पंडित बोलते हैं।

पकारांतः स्त्रीलिंगो नित्यबहुवचन अप् शब्दः ।

१	आपः	४	अद्भ्यः
सं०	,,	५	,,
२	अ :	६	अपाम्
३	अद्भिः	७	अप्सु

"आप्" शब्द सदा बहुवचन में ही रहता है । इसके एक तथा द्वि वचनके रूप प्रयोगमें नहीं होते ।

१ अद्भिः गात्राणि शुद्ध्यन्ति=पानीसे अंग शुद्ध होते हैं ।

२ अपां पतिः समुद्रः=जलका पति समुद्र है ।

३ अप्सु अमृतं अस्ति=पानीमें अमृत है ।

४ अपां फेनेन किं भवति ?=पानीके फेनसे क्या होता है ?

रकारान्तः स्त्रीलिंगो द्वार् शब्दः ।

१	द्वाः	द्वारौ	द्वारः
सं	,,	,,	,,
२	द्वारं	,,	,,
३	द्वारा	द्वार्भ्यां	द्वार्भिः
४	द्वारे	,,	द्वार्भ्यः
५	द्वारः	,,	,,
६	द्वारः	द्वारोः	द्वाराम्
७	द्वारि	द्वारोः	द्वार्सु

१ द्वारपालः द्वारि तिष्ठति=द्वारपाल दर्वाजेमें खडा रहता है।
२ द्वारं पिधेहि=दार बंद कर।
३ त्वं केन द्वारा आगतः=? तू किस द्वारसे आया ?
४ द्वाःसु उदकं स्थापय=द्वारों में जल रख।

यहां ध्यानमें रहे कि यह रकारांत स्त्रीलिंगी "द्वार्" शब्द है। अकारान्त नपुंसकलिंगी "द्वारं" शब्द इससे भिन्न है उसके रूप अकारान्त नपुंसकलिंगी "ज्ञानं" शब्दके समान होते हैं (ज्ञान शब्दके रूप अंक ८ में पाठ १० में देखिये)

रकारान्तः स्त्रीलिंगो गिर् शब्दः ।

१	गीः	गिरौ	गिरः
सं०	,,	,,	,,
२	गिरं	,,	,,
३	गिरा	गीर्भ्यां	गीर्भिः
४	गिरे	,,	गीर्भ्यः
५	गिरः	,,	,,
६	,,	गिरोः	गिराम्
७	गिरि	,,	गीर्षु

१ गिरा ईश्वरं स्तुहि=वाणीसे ईश्वरकी स्तुति कर।
२ गीर्भिः मनुष्याः व्यवहरन्ति=वाणियोंसे मनुष्य व्यवहार करते हैं।
३ तव गिरि मधुरता भवतु=तेरी वाणीमें मधुरता रहे।
४ तस्य गिरां माधुर्यं वर्णनीयं अस्ति=उसके वक्तृताओंकी मधुरता वर्णनीय है।

रकारान्तः स्त्रीलिंगः पुर् शब्दः ।

१	पूः	पुरौ	पुरः ।
सं०	,,	,,	,,
२	पुरं	,,	,,
३	पुरा	पूर्भ्याम्	पूर्भिः
४	पुरे	,,	पूर्भ्यः
५	पुरः	,,	,,
६	,,	पुरोः	पुराम्
७	पुरि	,,	पूर्षु

इसी प्रकार " धुर् " शब्दके रूप बनते हैं ।

१ यः पुरि वसति स पुरुषः भवति=जो शहरमें रहता है वह पुरुष होता है ।

२ शत्रूणां पुरां कः विदारकः ?=शत्रुओंके नगरियोंका कौन विदारक है ?

३ तासां पुरां कः राजा अस्ति ?=उन नगरियोंका कौन राजा है ?

४ स्वकीयं पुरं गच्छ=अपने शहरको जा ।

५ यदा पुरि तस्य वासः भवति तदा दुंदुभिः शब्दं करोति= जब नगरमें उसका निवास होता है तब ढोल शब्द करता है ।

पाठ १०

इस पाठमें आप निम्नलिखित श्लोकोंका अध्ययन कीजिये—

वैशम्पायन उवाच ।

युधिष्ठिरस्तमासाद्य तपसा दग्धकिल्बिषम् ।
अभ्यवादयत प्रीतः शिरसा नाम कीर्तयन् ॥ १ ॥

म. भारत वन. अ. १९९

अन्वयः—युधिष्ठिरः तं तपसा दग्धकिल्बिषं आसाद्य प्रीतः नाम कीर्तयन् शिरसा अभ्यवादयत ।

संस्कृतटीका—युधिष्ठिरः धर्मराजा तं आर्ष्टिषेणं मुनिं तपसा तपश्चरणेन दग्धकिल्मिषं दग्धपातकं आसाद्य प्राप्य, प्रीतः मनसा संतुष्टः भूत्वा, नाम कीर्तयन् स्वकीय नाम कथयित्वा शिरसा स्वकीयशीर्षेण अभ्यवादयत नमस्कृतवान् ।

अर्थ—युधिष्ठिरने उस तपसे निष्पाप बने हुए आर्ष्टिषेण मुनिको प्राप्त करके संतुष्ट होकर अपना नाम कहके सिरसे प्रणाम किया ।

ततः कृष्णा च भीमश्च यमौ च सुतपस्विनौ ।
शिरोभिः प्राप्य राजर्षिं परिवार्योपतस्थिरे ॥ २ ॥

संस्कृतटीका—ततः तदनंतरं कृष्णा द्रौपदी, भीमः च सुतपस्विनौ उत्तमतपयुक्तौ यमौ नकुलसहदेवौ शिरोभिः स्वकीयैः शीर्षैः राजर्षिं राजश्रेष्ठं आर्ष्टिषेणं प्राप्य नमस्कृत्य तं परिवार्य सर्वतः आवृत्य उपतस्थिरे उपविष्टाः ।

अर्थ—पश्चात् द्रौपदी भीम नकुल और सहदेव ये अपने सिरोंसे उस राजर्षिको प्रणाम करके उसके चारों ओर बैठ गये।

तथैव धौम्यो धर्मज्ञः पांडवानां पुरोहितः।
यथान्यायमुपाक्रान्तस्तमृषिं संशितव्रतम् ॥ ३ ॥

संस्कृतटीका—तथा एव तेन एव प्रकारेण पांडवानां पंडुनंदनानां पुरोहितः उपाध्यायः धर्मज्ञः धर्मशास्त्रज्ञः धौम्यः मुनिः यथान्यायं न्यायं रीतिं न उल्लंघ्य यथा भवति तथा तं संशितव्रतं नियमवन्तं ऋषिं आर्ष्टिषेणं उपाक्रान्तः प्राप्तः।

अर्थ—उसी प्रकार पांडवोंके पुरोहित धौम्य मुनिभी यथायोग्य रीतिसे उस नियमयुक्त ऋषिको प्राप्त हुए।

अन्वजानात्स धमज्ञो मुनिर्दिव्येन चक्षुषा।
पांडोः पुत्रान्कुरुश्रेष्ठानास्यतामिति चाब्रवीत् ॥ ४॥

अन्वयः=सः धर्मज्ञः मुनिः दिव्येन चक्षुषा पांडोः पुत्रान् कुरुश्रेष्ठान् अन्वजानात्। आस्यतां इति च अब्रवीत्।

संस्कृतटीका—सः धर्मज्ञः धर्मशास्त्रज्ञानयुक्तः मुनिः आर्ष्टिषेणः दिव्येन अलौकिकेन चक्षुषा नेत्रेण। अंतर्ज्ञानेन इत्यर्थः। पांडोः पुत्रान् पांडवान् कुरुश्रेष्ठान् इति अन्वजानात् ज्ञातवान्। तथा च तान् पांडवान् आस्यतां उपविशतां इति च अब्रवीत्।

अर्थ—वह धर्म जाननेवाला मुनि आर्ष्टिषेण दिव्य दृष्टिसे ये पांडुपुत्र कौरवश्रेष्ठ हैं ऐसा जानकर 'बैठ जांय ऐसा' बोले।

कुरूणामृषभं पार्थं पूजयित्वा महातपाः।
सह भ्रातृभिरासीनं पर्यपृच्छदनामयम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—महातपाः भ्रातृभिः सह आसीनं कुरूणां ऋषभं पार्थं पूजयित्वा अनामयं पर्यपृच्छत् ।

संस्कृतटीका—महातपाः महता तपःसामर्थ्येन युक्तः आर्ष्टिषेणः ऋषिः भ्रातृभिः भीमादिभिः बंधुभिः सह आसीनं उपविष्टं कुरूणां कारवाणां ऋषभं श्रेष्ठं पार्थं पृथापुत्रं धर्मराजान पूजायित्वा संपूज्य अनामयं रोगराहित्यं कुशलं पर्यपृच्छत् पृष्टवान् ।

अर्थ—बडे तपवाले उस ऋषिने भाइयों के साथ बैठे हुए कौरवोंमें मुख्य धर्मराजका सत्कार किया और कुशल पूछा ।

नानृते कुरुषे भावं कच्चिद्धर्मे प्रवर्तसे ।
मातापित्रोश्च ते वृत्तिः कच्चित्पार्थ न सीदति ॥ ६ ॥

म. भारत वन. अ. १५९

अन्वयः—हे पार्थ ! अनृते भावं न कुरुषे ? कच्चित् धर्मे प्रवर्तसे ? ते च मातापित्रोः वृत्तिः कच्चित् न सीदति ?

संस्कृतटीका—हे पार्थ ! हे पृथानंदन धर्मराज ! अनृते असत्ये भावं स्वकीयां प्रवृत्तिं न कुरुषे त्वं न करोषि ? तथा च त्वं धर्मे स्वधर्म पालने कच्चित् प्रवर्तसे किम् ? ते च तव मातापित्रोः मातरि पितरि च वृत्तिः वर्तनं कच्चित् न सीदति, मातापित्रोः सेवां करोषि वा न ?

अर्थ—हे धर्मराज ! असत्यकी ओर तो अपनी प्रवृत्ति तुम नहीं करते हो ? धर्ममें तो प्रवृत्ति तुम्हारी है ? माता पिताओंके संबंधमें तुम्हारी वृत्ति तो न्यून नहीं हो रही है ?

पाठ ११

वकारान्तः स्त्रीलिंगो दिव् शब्दः ।

१	द्यौः	दिवौ	दिवः
सं०	,,	,,	,,
२	दिवं	,,	,,
३	दिवा	द्युभ्याम्	द्युभिः
४	दिवे	,,	द्युभ्यः
५	दिवः	,,	,,
६	दिवः	दिवोः	दिवाम्
७	दिवि	,,	द्युषु

१ स्वकीयेन शुद्धेन कर्मणा पुरुषः दिवं गच्छति=अपने शुद्ध कर्मसे मनुष्य द्युलोकको जाता है ।

२ दिवि देवाः अधिश्रिताः=द्युलोकमें देव रहे हैं ।

३ दिवः स्थाने कस्य निवासः ?=द्युलोकके स्थानमें किसका निवास है ?

४ ऊर्ध्वं द्यौः प्रकाशते=ऊपर द्युलोक प्रकाशता है ।

पाठक यहां इसी पुस्तकके सप्तम पाठमें ओकारान्त " द्यो " शब्दके रूप देखें और इस शब्दके रूपोंके साथ तुलना करें । इन दोनों शब्दोंका तात्पर्य साधारणतया समान है इस लिये कदाचित् संदेह होना संभव है ।

शकारान्तः स्त्रीलिंगो दिश् शब्दः ।

१	दिक्, दिग्	दिशौ	दिशः
सं०	,, ,,	,,	,,
२	दिशं	,,	,,
३	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
४	दिशे	,,	दिग्भ्यः
५	दिशः	,,	,,
६	,,	दिशोः	दिशाम्
७	दिशि	,,	दिक्षु

१ पूर्वस्यां दिशि कस्य राज्यं अस्ति ?=पूर्वदिशामें किसका राज्य है ?

२ सर्वेषां दिशां मध्ये व्याप्य कः भवति ?=सब दिशाओंके मध्यमें व्याप कर कौन होता है ?

३ दिग्भ्यः स्वाहा=दिशाओंके लिये स्वाहा ।

पाठक यहां स्मरण रखें की आकारान्त " दिशा " शब्द इससे भिन्न है और उसके रूप " रमा " शब्दके रूपोंके समान होते हैं ।

षकारान्तः स्त्रीलिंगस्त्विष् शब्दः ।

१	त्विट्, त्विड्	त्विषौ	त्विषः
सं०	,, ,,	,,	,,
२	त्विषं	,,	,,

३	त्विषा	त्विड्भ्यां	त्विड्भिः
४	त्विषे	,,	त्विड्भ्यः
५	त्विषः	,,	,,
६	,,	त्विषोः	त्विषाम्
७	त्विषि	;;	त्विट्सु, त्विट्त्सु

इसी प्रकार निम्नलिखत शब्दोंके रूप होते हैं—

प्रावृष्=पर्जन्यका ऋतु	त्विष्=प्रकाश
तृष्=तृषा, प्यास	रुष्=क्रोध

१ प्रावृषि वृष्टिः भवति=पर्जन्यके ऋतुमें वृष्टि होती है ।
२ स पुरुषः तृषा पीडितः=वह मनुष्य प्यास से दुःखी है ।
३ त्वं रुषा युक्तः न भव=तू क्रोधसे युक्त न हो ।
४ सूर्यः स्वकीयया त्विषा युक्तः अस्ति=सूर्य अपने प्रकाशसे युक्त है ।

सकारान्तः स्त्रीलिंगो भास् शब्दः ।

१	भाः	भासौ	भासः
सं०	,,	,,	,,
२	भासं	,,	,,
३	भासा	भाभ्याम्	भाभिः
४	भासे	,,	भाभ्यः
५	भासः	,,	,,

६	भासः	भासोः	भासाम्
७	भासि	,,	भास्सु

१ ईश्वरस्य भासा सर्व इदं विभाति=ईश्वरके प्रकाशसे सब यह प्रकाशता है ।

२ सूर्यस्य भासि प्राणिनां जीवनसत्वं भवति=सूर्यके प्रकाशमें प्राणियोंके जीवन का सत्व होता है ।

सकारान्तः स्त्रीलिंगो आशिस् शब्दः ।

१	आशीः	आशिषौ	आशिषः
सं०	,,	,,	,,
२	आशिषं	,,	,,
३	आशिषा	आशीर्भ्याम्	आशीर्भिः
४	आशिषे	,,	आशीर्भ्यः
५	आशिषः	,,	,,
६	,,	आशिषोः	आशिषाम्
७	आशिषि	,,	आशीःषु

१ योगिनः आशिषा अहं कृतार्थः अस्ति=योगीके आशीर्वाद से मैं कृतार्थ हूं ।

२ तेषां आशीर्भिः युष्माकं कल्याणं भविष्यति=उनके आशीर्वादोंसे तुम्हारा कल्याण होगा ।

हकारांतः स्त्रीलिंग उपानह् शब्दः ।

१	उपानत्, उपानद्	उपानहौ	उपानहः
सं०	" "	"	"
२	उपानहं	"	"
३	उपानहा	उपानद्भ्यां	उपानद्भः
४	उपानहे	"	उपानद्भ्यः
५	उपानहः	"	"
६	"	उपानहोः	उपानहाम्
७	उपानहि	"	उपानत्सु

१ हे भृत्य ! मम नूतनां उपानहं अत्र आनय=हे नौकर ! मेरा नया जूता यहां ला ।

२ तथा एतां पुराणं उपानहं तत्र नय=तथा यह पुराणा जूता वहां ले जा ।

३ मम द्वौ अपि उपानहौ आर्द्रौ स्तः=मेरे दोनों जूते गीले हैं।

पाठ १२

इस पाठमें निम्नलिखित श्लोकोंका अध्ययन कीजिये—

कच्चित्ते गुरवः सर्वे वृद्धा वैद्याश्च पूजिताः ।
कच्चिन्न कुरुषे भावं पार्थ पापेषु कर्मसु ॥ ७ ॥

म. भारत वन. अ. १६९

अन्वयः—कच्चित् ते सर्वे गुरवः वृद्धाः वैद्याः च पूजिताः? हे पार्थ ! पापेषु कर्मसु कच्चित् भावं न कुरुषे ?

अर्थ—तुम सब गुरु वृद्ध वैद्योंकी पूजा तो करते हो ? हे धर्मराज ! पापकर्मोंमें तो तू भाव नहीं करता है ?

सुकृतं प्रतिकर्तुं च कच्चिद्धातुं च दुष्कृतम् ।
यथान्यायं कुरुश्रेष्ठ ! जानासि न विकत्थसे ॥ ८ ॥

अन्वयः—हे कुरुश्रेष्ठ ! सुकृतं प्रतिकर्तुं च दुष्कृतं हातुं च कच्चित् यथान्यायं जानासि न विकत्थसे ?

अर्थ—हे कुरुओंमें श्रेष्ठ ! पुण्य करने और पाप दूर करनेके लिये यथायोग्य रीतिसे तो तू जानता है और (केवल) भाषण तो नहीं करता ?

यथार्हं मानिताः कच्चित्त्वया नंदन्ति साधवः ।
वनेष्वपि वसन्कच्चिद्धर्ममेवानुवर्तसे ॥ ९ ॥

अन्वयः—त्वया यथार्हं मानिताः साधवः कच्चित् नंदन्ति ! वनेषु वसन् अपि धर्मं एव अनुवर्तसे ?

अर्थ—तेरे द्वारा यथा योग्य संमानित हुए साधु आनंदित तो हैं! वनमें वसता हुआ भी तू धर्मके अनुसार ही बर्ताव तो करता है ?

कच्चिद्धौम्यस्त्वदाचारैर्न पार्थ परितप्यते
दानधर्मतपःशौचैरार्जवेन तितिक्षया ॥ १० ॥

अन्वयः—हे पार्थ ! त्वदाचारैः धाम्यः कच्चित् न परितप्यते ? दानधर्मतपःशौचैः आर्जवेन तितिक्षया !

अर्थ—हे धर्मराज ! तेरे आचारोंसे धौम्यमुनि तो दुखी नहीं होता ? दान धर्म तप (शौच) शुद्धता (आर्जवं) सरलता और (तितिक्षा) सहनशक्ति आदि तो ठीक हैं !

पितृपैतामहं वृत्तं कच्चित्पार्थाऽनुवर्तसे ?
कच्चिद्राजर्षियातेन पथा गच्छसि पांडव ॥ ११ ॥

अन्वय—हे पार्थ ! पितृपैतामहं वृत्तं कच्चित् अनुवर्तसे ? हे पांडव ! राजर्षियातेन पथा काचित् गच्छसि ?

अथ—ह धर्मराज ! पिता और पितामह के बर्ताव के समान आचरण तो करते हो ! हे पांडव ! राजर्षि गये हुए मार्गसे तो तुम जाते हो ?

स्वे स्वे किल कुले जाते पुत्रे नप्तरि वा पुनः ।
पितरः पितृलोकस्थाः शोचंति च हसन्ति च ॥ १२ ॥

अन्वयः—स्वे स्वे कुले पुत्र वा पुनः नप्तरि जाते पितृलोकस्थाः पितरः शोचंति च हसन्ति च किल ।

अर्थ—अपने अपने कुलमें पुत्र अथवा फिर पोता उत्पन्न होनेपर पितृलोकमें रहने वाले पितर शोक करते हैं और कभी हंसते भी हैं ।

किं तस्य दुष्कृतेऽस्माभिः संप्राप्तव्यं भविष्यति ।
किंचाऽस्यसुकृतेऽस्माभिःप्राप्तव्यमिति शोभनम् ।१३॥

अन्वयः—तस्य दुष्कृते अस्माभिः किं संप्राप्तव्यं भविष्यति ? अस्य च सुकृते अस्माभिः शोभनं किं प्राप्तव्यं इति ?

अर्थ—(पितर अपने मनमें कहते हैं कि) इस के पाप करनेपर

हमने क्या प्राप्त करना होगा ? और इसके पुण्य करनेपर हमको उत्तम क्या प्राप्त होगा ?

पिता माता तथैवाऽग्निर्गुरुरात्मा च पंचमः ।
यस्यैते पूजिताः पार्थ तस्य लोकावुभौ जितौ ॥१४॥

अन्वयः—हे पार्थ ! पिता, माता तथा एव अग्निः, गुरुः च पंचमः आत्मा एते यस्य पूजिताः तस्य उभौ लोकौ जितौ ।

अर्थ—हे पृथापुत्र ! पिता, माता, तथा अग्नि, गुरु और पांचवां आत्मा ये जिसके पूजित हुए हैं (अर्थात् जिसने इनकी पूजा की है) उसको दोनों लोक प्राप्त हुए हैं ।

युधिष्ठिर उवाच ।

भगवानार्य माऽऽहैतद्यथावद्धर्मनिश्चयम् ।
यथाशक्ति यथान्यायं क्रियते विधिवन्मया ॥ १५॥

म. भारत वन. अ. १९९.

अन्वयः—हे आर्य ! भगवान् धर्मनिश्चयं यथावत् मा आह, एतत् मया यथाशक्ति यथान्यायं विधिवत् क्रियते ।

अर्थ—हे आर्य ! आपने धर्मका निश्चय जैसा मुझे कहा है, वह मैं यथाशक्ति और न्यायके अनुसार विधिके अनुसार करता हूं ।

पाठक इन श्लोकोंका अच्छीप्रकार अध्ययन करें और संभव हुआ तो श्लोकोंको कंठ करें ।
